शिक्षण नवाचारों का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव
(Impact of Teaching Innovations on Student's Academic Achievements)

डॉ. पूनम अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर

शिक्षक शिक्षा विभाग,

धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ़

सारांश :

शिक्षा किसी भी व्यक्ति समाज व राष्ट्र की प्राजवायु है तथा उनके सर्वांगीण विकास की धुरी है। शिक्षा विकासवादी गत्यात्मक व निर्माणकारी प्रक्रिया है। विश्व के तेजी से प्रगति करते राष्ट्रों के मध्य लगभग 140 करोड़ आबादी के साथ भारत का शिक्षा तंत्र विश्व का तीसरा सबसे बड़ा शिक्षा तंत्र है। वैदिक काल से ही भारत की शिक्षा जीवंत, निर्माणकारी व नवाचारों से परिपूर्ण रही है। सीखने–सिखाने की गतिवृद्धि व ज्ञान को आत्मसात कराने के लिए शिक्षण नवाचारों का प्रयोग समाज, स्थान व परिस्थितियों के साम्यानुकूल होता आया है और वर्तमान में तीव्रता के साथ हो रहा है। व्यक्ति एवं समाज में हो रहे परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा है। शिक्षा को समयानुकूल तथा सर्वसुलभ बनाने के लए शैक्षिक क्रियाकलापों में नूतन प्रवृतियों की महती उपयोगिता है। शिक्षण–अधिगम की उन्नति व अभ्युदय में तकनीकी नूतन प्रवृतियों के साथ–साथ सेवा नवाचार ने अपनी उपयोगिता स्वयं सिद्ध कर दी हैं। नवाचारी शिक्षण पद्धतियों से शिक्षण कार्य करने में अध्यापक एवं विद्यार्थियों के लिए शिक्षण अधिगम एक सुरूचिपूर्ण प्रक्रिया बन सकेगी। विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति, अन्वेषण, निर्णय लेने, स्व मूल्यांकन करने की क्षमता तथा सृजनात्मक, रचनात्मक, आत्मविकास आदि कौशलो का विकास हो सकेगा। शिक्षण नवाचारों के माध्यम से बच्चों का सर्वांगीण विकास तो होता ही है साथ ही उनका सतत और व्यापक मूल्यांकन भी सम्भव हो पाता हैं।

कुंजी शब्दः– *शिक्षा, शिक्षण–अधिगम, नवाचार, शिक्षण पद्धति, स्रजनात्मकता, विकास, मूल्यांकन।*

प्रस्तावना :

शिक्षा किसी भी समाज का आधार तथा संस्कृति की मूल होती है। शिक्षा के साधारणतः दो उद्देश्य माने गये हैः प्रथम, समाज के सदस्यों का समाजीकरण करना। उन्हें ऐसा ज्ञान, मूल्य, प्रवृत्तियां तथा व्यवहार के आदर्श मानदण्ड प्रदान करना जो उन्हें व्यस्क होने पर विभिन्न सामाजिक सम्बन्धों के बीच अपनी भूमिका निभाने योग्य बनाना सकें। द्वितीय, समाज की विधमान व्यवस्था में आजीविका कमाने हेतु युवाओं को प्रशिक्षण देकर कुशल बनाना। इसका तात्पर्य है कि नवाचारों के माध्यम से युवाओं की निपुणता में वृद्धि करना एवं प्रविधियों को सिखना। शिक्षा सृजनात्मक स्वतन्त्र चिन्तन, ज्ञान के प्रति आलोचनात्मक प्रवृत्ति अविष्कार करने तथा परिवर्तन के साथ सामन्जस्य स्थापित करने की योग्यता को विकसित करने की प्रक्रिया का नाम है। शिक्षा जीवन जीनें की कला है। शिक्षा राष्ट्रों के उत्थान और पतन का आधार होती है। शिक्षक ही शिक्षा के सचेतन वाहक होते है। शिक्षा ही संस्कारित और सभ्य समाज का निर्माण कर सकती है। शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का अपरिहार्य साधन है। शिक्षा के बिना समाज की प्रगति कभी भी पूर्ण आयामी नहीं हो सकती है। महात्मा गांधी के शब्दों में '' शिक्षा बालक तथा व्यक्ति के शरीर, मन तथा

आत्मा की सर्वोत्तमा का सामान्य प्रकटीकरण है।'' शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति स्वयं तथा दूसरों को आत्मनिर्भर एवं आत्म प्रेरित कर उन्नति के शिखर पर पहंचा सकता है।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है जिसके माध्सम से क्रिया, वस्तु या विधि में बदलाव होते है। परिवर्तन एक आवश्यक गतिशील प्रक्रिया है। परिवर्तन और नवाचार एक सिक्के के दो पहलू हैं। कोई भी कार्य जो नवीन हो या किसी भी कार्य को नवीन तरीके से करना ही नवाचार है। नवाचार के द्वारा ही व्यक्ति एवं समाज को चेतना, स्फूर्ति और नवीन ऊर्जा की प्रप्ति होती है। नवाचार के आधार में नवीनता या नवीन रचनात्मक शैली होती है। समाज की धारा को गति प्रदान करने व लोगो को इस धारा से जोड़ने में नवाचार अत्यन्त उपयोगी साबित होते हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में आ रही समस्याओं के निराकरण करने तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सरलीकरण के लिए शिक्षण नवाचारों का प्रयोग किया जाता है। शिक्षण नवाचार नवीन रचनात्मक शैली के द्वारा या स्रजनात्मकता को शैली के रूप में उभारकर शिक्षण करने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया बाल अन्तः मन को समझने पर जोर देती है। शिक्षण प्रक्रिया को कैसे विद्यार्थियों के मस्तिष्क से जोड़ा जाय तथा ज्ञान को रचनात्मक तरीके से उन्हें आत्मसात कराया जाये। विचारों के प्रभावी संप्रेषण के लिए तथा शिक्षण चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने में सक्षम बनाने में शिक्षण नवाचारों की प्रभावी भूमिका है। शिक्षण नवाचारों के अन्तगर्त उन विधियों को रखा गया है जो शिक्षण को सुदुढ करने और कक्षाओं को अधिक रोचक बनाने में सहायक होती है। शिक्षण नवाचार के अन्तगर्त अनेक विधियों एवं कार्यों को समाहित किया जा सकता है परन्तु उनमें से प्रमुख शिक्षण नवाचार जिन्होंने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये है तथा इसे नवीन कलेचर प्रदान किया है कि व्याख्या इस प्रकार है –

रचनात्मक शिक्षण (Creative Teaching) :– रचनात्मक शिक्षण में खेल दृश्य अभ्यास को शामिल किया जाता है। इसके माध्यम से विचारों की रचनात्मकता को विकसित किया जाता है तथा उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है।

दृश्य–श्रब्य साधनों द्वारा शिक्षण (Audio-Visuals Tools) :– शिक्षण में आडियों–विजुअल सामाग्री का प्रयोग करना, इसमें माडल फिल्मस्ट्रिप, फिल्मे, चित्र, इन्फोग्रफिक्स आदि टूल आते है। इन उपकरणों की सहायता से बच्चों की कल्पना शक्ति को विकसित करने एवं उनकी आन्तरिक क्षमता को बाहर निकालने व निखारने का कार्य किया जाता है।

मस्तिष्क झंझावात (Brain Storm) :– इसमें कक्षाओं में बुद्धिशीलता सत्र आयोजित किये जाते है। इससे रचनात्मक या स्तजनात्मकता पर जोर दिया जाता है। यह साधारण बुद्धिशील, समूह मंथन या युग्मित मंथन के माध्यम से किया जाता है।

भूमिका निभाना (Role Play) :– भूमिका निभाना के माध्यम से शिक्षण बच्चों के पारस्परिक कौशल को विकसित करने का बेहतर नवाचार शिक्षण है। यह बच्चों में व्यवहारिकता के ज्ञान में वृद्धि करता है तथा छात्रों को यह समझाने में सहायता करता है कि शैक्षणिक सामाग्री उनके दैनिक जीवन में कैसे प्रसंगिक होगी। इसके माध्यम से उन्हें भावी जीवन की परिस्थितियों का अनुभव कराकर समझ को विकसित किया जाता है।

कक्षा के बाहर शिक्षण (Field Trip) :– इसमें बच्चों को कक्षा के बाहर प्रासंगिक जगहों पर ले

जाया जाता है तथा वहां के माहौल में सैर–सपाटे के माध्यम से सीखाया जाता है। यह सीखने तथा सिखने का एक मनोरंजक तरीका है जो आनन्द के साथ ज्ञान भी प्रदान करता है।

कहानी शिक्षण (Story Board Teaching) :– इसमें विद्यार्थियों की कल्पना का प्रयोग कर उन्हें संस्मरण या विजुअलाइजेशन के माध्यम से तथ्यों को कहानी की तरह बताया जाता है। बच्चों को रूचिकर व मनोरंजन तरीके से सीखया जाता है। इस विधि द्वारा सिखाने से तथ्य काफी आसानी से समझाये जा सकते है और उन्हें आत्मसात कराया जाता है।

पहेली और खेल (Puzzle and Games) :– इसमें बच्चों को पहेली और खेल के माध्यम से सिखाया जाता है। इस नवाचारी शिक्षण के द्वारा बच्चों को रचनात्मक सोचने और चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जाता है।

योजना विधि (Project Method) :– इस शिक्षण में विद्यार्थियों के जीवन से सम्बन्धित समस्याओं को वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। विद्यार्थी स्वयं विषयवस्तु सामग्री का अध्ययन करके समस्या का समाधान करते हैं। इसमें विद्यार्थियों के स्वयं करने सीखने पर जोर दिया जाता है।

केस स्टडी (Case Study) :– इस का आधार विद्यार्थियों की जिज्ञासु प्रवृत्ति है। इसे समस्या आधारित सींखना के रूप में जाना जाता है। इसमें विद्यार्थियों की सक्रिया भूमिका रहती है तथा स्वयं समस्या का समाधान करता है। शिक्षक मात्र परिचायक की भूमिका निभाता है।

देश में समय और परिस्थितियों के कारण शिक्षा के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हुए हैं। देश की राजनीतिक आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों का शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। शैक्षिक संरचना की सुदृढ़ता के द्वारा ही मानवीय मूल्यों और उत्थान की प्रक्रिया को आश्रय मिलता है। व्यक्ति की स्वतन्त्रता व समानता में शिक्षा का अभूतपूर्व योगदान है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति की प्रगति का आधार शिक्षा है। भारत में 50 फीसदी से अधिक आबादी 25 वर्ष से कम आयु वालों की है अर्थात राष्ट्र निर्माण के लिए इन युवाओं को तैयार करने के लिए शिक्षा संरचना मजबूत व सर्वसुलभ होनी चाहिए। शिक्षा संरचना का हाल बेहाल है अधिकांश शिक्षक सामर्थ्यानुसार काम नहीं करना चाहते और पर्याप्त धनपूर्ति के लिए बिलखते रहते हैं। बच्चे शिक्षा की रेस में यन्त्रवत दौड़े चले जा रहे हैं जिसकी समाप्ति का ओर छोड़ नजर नहीं आ रहा। नम्बरों की होड़ मची है 90 फीसदी से अधिक नम्बर पाने वाले तक को नामी विद्यालयों में प्रवेश नहीं मिल पा रहा हैं।

ऐसी स्थितियों में शिक्षण नवाचार ही वह सहारा है जिनके द्वारा ज्ञान को आत्मसात कराकर व्यक्ति को मानव बनाया जा सकता है। उन्हें नम्बरों की दौड़ से अलग कुछ रूचिकार और आनन्ददायक सीखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। शिक्षण नवाचारों से न केवल विद्यार्थी सक्रिय होते है अपितु शिक्षकों में भी सक्रिय चेतना का प्रसार होता है। उन्हें कुछ नया सीखने और सिखाने की प्रेरणा मिलती है। शैक्षिणक नवाचार शिक्षकों और विद्यार्थियों को कुछ कर गुजरने की माजदा से रूबरू कराता है तथा उनकी स्रजनात्मकता को नवीन आयाम प्रदान करता है। विद्यार्थियों को हर पल कुछ नया और नये तरीके से सीखने का अवसर मिलता है जो आजीवन उनके साथ स्मृति पटल पर अंकित रहता है। उनके कार्य करने की क्षमता तथा सोचने की क्षमता में वृद्धि होती है। शिक्षण नवाचारों के माध्यम से विद्यार्थियों की उपलब्धियों

पर पड़ने वाले प्रभावों पर विहंगम दृष्टि डालने पर कुछ प्रमुख प्रभाव दृष्टिगोचर होते है –

ज्ञान का स्थायित्व :– शिक्षण नवाचारों के प्रयोग में विद्यार्थी पूर्णतः सक्रिय रहते है जिससे प्राप्त ज्ञान को वह अधिक समय तक आत्मसात रख पाते हैं। उनकी स्मृति में प्राप्त ज्ञान अधिक स्थायी रहता है क्योकि उसे उन्होंने अपनी सक्रियता, अनुभव व आत्मप्रयास से प्राप्त किया होता है।

विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास :– शिक्षा नवचारों की विद्यार्थियों के स्वांगीण विकास में अहम भूमिका है। इनके द्वारा विद्यार्थियों की विभिन्न क्षमताओं एवं विकास की सम्भावनाओं को ज्ञात कर उनके विकास की व्यवस्था की जाती है ताकि उनका ज्ञानात्मक के साथ–साथ, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास भी उत्तम ढंग से सम्भव हो सकें।

कौशलों का विकास :– शिक्षा नवाचारों के माध्यम से विद्यार्थियों में कौशलों को विकसित किया जाता है। उनमें जीवनोपयोगी कौशल का विकास सम्भव हो पाता है जिससे वह भावी जीवन में सफल हो सकें।

अनुसन्धान को बढ़ावा :– शिक्षा में अनुसंन्धान का विकास नवाचारों के उपयोग से ही सम्भव है। शिक्षा नवाचारों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से सम्बन्धित समस्याओं पर शोध कार्य सम्पन्न कराये जाते है। जिससे विद्यार्थियों में अनुसन्धान की प्रवृति को बढ़ावा मिलता है और उनमें अनुसन्धान के प्रति जिज्ञासा व रूचि का विकास होता है।

संस्कृति से लगाव :– भारतीय संस्कृति की विशेषता बन्धुत्व, शक्ति और सहयोग रहा है। शिक्षण नवाचार के माध्यम से भारत में शिक्ष पाश्चात्य प्रभाव को क्षीण कर अपनी संस्कृति के प्रति लगाव की भावना को प्रोत्साहन मिलता है। विद्यार्थी पारस्पारिक सद्भाव और सदाचरण सीखते है जो उन्हें मानवीय मूल्यों के साथ जीना सिखाता है।

मूल्यों को प्रोत्साहन :– नूतन अभिवृत्तियों के माध्यम से सीखने पर विद्यार्थियों में मूल्यों को आत्मसात करने के सुदृण अवसर प्राप्त होते है।। भारतीय मूल्यों के प्रति निष्ठा व जाग्रति के सुअवसर मिलने से उनमें राष्ट्रनिर्माण की क्षमता का विकास होता है जो उनके एवं सम्पूर्ण समाज के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

साम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा :– नूतन अभिवृत्तियों के प्रयोग के द्वारा विद्यार्थियों में पारस्परिक प्रेंम व सद्भाव को बढ़ावा मिलता है। वह टोली में सचेतन प्रयास करते है और सीखते है जिससे शिक्षा में नूतन आयामों को प्रोत्साहन मिलता और सामाजिक सद्भाव को मजबूती प्राप्त होती है।

समस्या समाधान की क्षमता का विकास :– शिक्षा नवाचारों के माध्यम से विद्यार्थियों को समस्या समाधान सिखाया जाता है इससे उनमें प्रत्येक परिस्थिति में समस्याओं से निजात पाने की क्षमता का विकास होता है। उनमें जीवन की चुनौतियों से निपटने की शक्ति आती है।

सृजनात्मकता पर प्रभाव :– नवाचार के द्वारा विद्यार्थियों में स्रजनात्मकता को प्रोत्साहन दिया जाता है। उनकी रचनाशीलता कल्पनाशीलता को निखारा जाता है। उनमें कुछ अलग करने की शक्ति को निखारा जाता है जिससे उनके स्वभाविक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिलता है जो उनके व्यक्तित्व के विकास में मील का पत्थर साबित होता है।

सक्रिय सहभागिता की प्रकृति का विकास :– नवाचारी शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में जीवन को हर क्रियाविधि में सक्रिय सहभागिता की प्रकृति का विकास होता है। वह न केवल कक्षा क्रियाविधियों में बल्कि पूरे सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में क्रान्ति के वाहक शिक्षण नवाचार ही रहे हैं। शिक्षण व्यवस्था में आमूल–चूल परिर्वतनों का श्रेय नवाचारों को ही जाता है। इनके द्वारा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया अत्यन्त सरलीकृत रूप में लोगों तक पहुंच पायी। लोगो ने मुक्त हस्त से शिक्षा नवाचारों को अपनाया व शैक्षिक जीवन का अभिन्न अंग बनाया। नवाचारों ने शिक्षकों और विद्यार्थियों को धरातली स्तर पर सोचने व सीखने को प्रेरित किया। विद्यार्थियों के शैक्षिक परिणामों में सुधार आया साथ ही उनकी उपलब्धियों में वृद्धि भी हुई। नवाचारों को द्वारा विद्यार्थियों को व्यक्तित्व के हर पहलू को शिक्षा के द्वारा महसूस कराया गया तथा उनमें उन्नति के लिए प्रयत्न सम्भव हो सकें। भारत जैसे विकासशील देश में जहां साक्षरता अभी भी लगभग 74 फीसदी ही हो पायी है शिक्षा नवचाचारों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। साक्षरता को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुचाने में शिक्षा नवाचार अत्यन्त कारगर भूमिका निभा सकते है। नवाचारी ज्ञान के द्वारा अभिप्रेरित विद्यार्थी राष्ट्र निर्माण में कारगर रूप से सहायक होते है तथा अपने स्रजनात्मक ज्ञान व कौशल का प्रयोग निरक्षरता की समाप्ति में उपयोगी रूप से कर सकते है। विद्यार्थी स्वयं के भविष्य का सचेतन निर्माण कर राष्ट्र के भविष्य को भी सुनहरे अक्षरो में लिख सकते हैं।

सन्दर्भ सूची :

1. भाई योगेन्द्रजीत (2018) शिक्षा के नवाचार एवं नवीन प्रवृत्तियां, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा उ.प्र.।
2. भाई योगेन्द्रजीत (2020) शिक्षा में नवाचार, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा उ.प्र.।
3. आर. बन्सल (2021) शिक्षा में नवीन प्रवृत्तियां एवं नवाचार, एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा उ.प्र.
4. जगमोहन सिंह राजपूत (2020) शिक्षा की गतिशीलता : अवरोध नवाचार एवं सम्भावनायें, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली।
5. डॉ. सन्ध्या श्रीवास्त्व, अरूण कुमार एवं सूर्य प्रताप सिंह (2018) शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार, ठाकुर पब्लिकेशन प्रा0 लि0 लखनऊ उ0प्र0
6. https://www.corp.kaltura.com, Innovalive Teaching strategies.
7. https://www.vikas concept.com, The importance ot Innovation in education.
8. https://www.graduateprogram.org,The impact of Innovation in education
9. https://www.iedeu.com, An Interactive Impact to Innovation in Education Sector.
10. https://www.jagrran.com